श्री अलमेल मंगापुरम्

श्री अलमेल मंगापुरम्

तेलुगु गूल
सी. पद्मावती

अनुवाद
सी. पद्मावती

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति
2013
Srinivasa Bala Bharati - 114
(Children Series)

SRI ALAMELU MANGAPURAM

Telugu Version
C. Padmavathy

Translator
C. Padmavathy

Editor-in-Chief
Prof. Ravva Sri Hari

T.T.D. Religious Publication Series No.969
© All Rights Reserved

First Edition - 2013

Copies:

Price:

Published by
L.V. Subrahmanyam, I.A.S.,
Executive Officer
Tirumala Tirupati Devasthanams
Tirupati.

Printed at
Tirumala Tirupati Devasthanams Press
Tirupati.

Prakshan

व्याख्या

बच्चों का हड़द पुष्पों की भांति निर्मल होता है। उत्तम कप्पूर से बढ़ कर सुवासित उन के दिलों में बढ़ता संस्कार पैदा करना है। वयस्क उन में हम अच्छे संस्कार जाते है तो यह काल तक आदर्श जीवन बिताने की सुख्तियों निव पूरा जाती है। बचपन में संस्कार प्राप्त बच्चे भावी पीढियों के लिए समुचित मार्ग दर्शन कर सकते हैं इसलिए हमारे इन होनहार बच्चों के लिए विरासत बने पौराणिक मूर्तियों तथा इतिहास में निहित मानवता के मूल्यों का परिचय कराना अत्यंत आवश्यक है।

प्राप्तकथा

बिना लक्ष्य का जीवन निष्फल होता है। बच्चों को लक्ष्य की ओर प्रेरित कर उनके जीवन को सही मार्ग पर ले जाने की जिम्मेदारी वहों के ऊपर है। महान व्यक्तियों की आदर्शमय जीवनसत्ता का परिचय करा कर उनमें प्रेरणा जागाने के उद्देश्य से ‘श्रीनिवास बाल भारती’ का शुभारंभ किया गया है।

इस योजना का मुख्य लक्ष्य नैतिक मूर्तियों के माध्यम से बच्चों में तथा सर्वत्र फैलाने का है। हमें यह जानकर अत्यंत आनंद हो रहा है कि बच्चे था परिवार के सभी लोग इन पुस्तकों का साक्षात्कार कर रहे हैं। इससे तिरुमल तिरुपति देवस्थानों का मुख्य उद्देश्य कुछ हद तक सफल हो रहा है।

श्रीनिवास बाल भारती की योजना पैदा करके उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर कम कीमत पर सभा को उपलब्ध कराने का प्रयास, करनेवाले प्र. एस.बी. रथनाथाचार्य आभिनंदनीय हैं।

इस के प्रकाशन में सहयोग देनेवाले लेखकों तथा कलाकारों के प्रति में अपना धन्यवाद अर्पित करता हूं।

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति
प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत ज्ञानों की जीवनियों के बारे में जानकारी लेते, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उड़कर रूप से जीने के मारे को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत ज्ञानों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आवश्यक मूल धार्मिक सिद्धांतों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के प्रचुर विभाग ने ड्र.एस.वी.रघुनाथार्य के संपादन में संपीडित "बाल भारती सीरीज" के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगू में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत ज्ञानों की जीवनियों से संबंधित लघुभाषा 100 पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया। इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। प्रारम्भिक तौर पर इनको औपन्यास व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व निजी पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्देश्य यही है कि बच्चे पढ़ें और बड़े लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सुजनात्मक शक्ति को बढ़ा दें। फल स्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

आर. श्रीहरि
एडिटर-इन-चीफ
ti.ti.देवस्थानम्।
श्री अलमेल मंगापुरम्
(श्री पद्मावती क्षेत्र)

ईशानां जगतोदर्श वेद्वर्ताविवर्ण: परां प्रेयसी
तत्क्षः-स्थलनित्यासरसिकां तत्कालिनिवर्तीनीम्।
पद्मालंकृतपरिणामवियुगां पद्मासनस्यं श्रियं
वातस्याविदुगुणोऽवलं भगवती वर्ते नमस्तरम्।

भारत एक पुष्प भूमि है जो कन्याकुमारी से हिमालयों तक बहसे है जिस में पवित्र गंगा नदी जैसी नदियाँ बहली हैं। इसके उत्तर में बद्रीनाथ और दक्षिण में रामेश्वरम पवित्र पुष्प क्षेत्र हैं। कलियुग में श्री वेद्वर्तावलम (तिरुवलम्) कलियुग-वेदकुण्ड कहा जाता है जहाँ महाविषु अर्य-रूप में प्रभु-श्रीनिवास नाम से विराजमान हैं। 'परमानंद' शब्द का साही अर्थ-तब जात होता है जब भक्त श्री वेद्वर्तावल की सन्निधि में खडे होकर अपनी भावना की दियानुभूति पाते हैं। इसी प्रकार तिरुवलार में श्री पद्मावती देवी के दर्शन से भक्तों के हरियों में क परमानंद का अनुभव होता है। प्रत्येक हिन्दू को आध्यात्मिक रूप से पद्मावती देवी के क्षेत्र की महिमा जानना अत्यावश्यक है।

इस क्षेत्र की महिमा पद्मपुराण के क्षेत्र-काण्ड के वेद्वर्तावल महात्मा में श्रीपद्मप्रसार की श्रेष्ठता देवता और देवदर्शन के वार्तालाप के द्वारा विदित होता है।
श्री लक्ष्मीदेवी का अदर्श

नैमिशारण्य में एक बार ऋषियों ने त्रिगुणों में जो प्रशा, विष्णु और महेश्वर हैं उनके गुणों की श्रेणी की परीक्षा लेने का निर्णय किया। इस कार्य के लिए महर्षि भूगु को सिखाया गया। पहले वह प्रशा के पास गया जहां ऋषि का सम्मान तक नहीं हुआ। उसे मालूम हुआ कि चतुर्वेद (चार मुखों का देव) रजोगुण का है। इसके बाद वह केलास गया जहां शिव अपनी पद्म पार्वती के साथ-आनंद मच था। शिव के क्रोधपूर्ण नेत्रों को देखकर ऋषि ने उसे (रत्र) तमोगुण वाला समझ लिया। उसने वैकुण्ठ में जाकर देखा कि श्रीनारायण लक्ष्मीदेवी के साथ बैठा हुआ था। तत्काल उसने विष्णु के ह्रदय पर जोर से अपने पैर से धक्का दिया। महाविष्णु ने ऋषि के पाद को विष्णु ने अपने हाथ में लेकर तल्लू में जो उसका शीर्षरा नेत्र था उसे अंधा-कर दिया। श्रीलक्ष्मी को विष्णु पर क्रोध-आया। उस ऋषि के पाद को विष्णु ने अपने हाथ-में लिया था उसने अपने पतिदेव के ह्रदय पर पैर से धक्का मारा था। उसी क्षण वह वहां से अदश्य होकर पाताल लोक गयी जहां महर्षि कपिल तपस्या करता था। महर्षि उस देवी का ह्रदय से स्वागत और उसके रहने का उपयुक्त स्थल दिखाकर भक्ति से उसकी-उपासना करने लगा। उसकी श्रद्धा और भक्ति से प्रसन्न होकर लक्ष्मी-देवी बहुत दिनों तक वहाँ रह गयी।

भगवान का लक्ष्मी का अन्वेषण करना

लक्ष्मीदेवी जो विष्णु भगवान की चिरंतन सहचारिणी है, उसके वियोग से भगवान को एक क्षण एक युग समाप्त लगा था। वह नीला देवी को वहीं छोड़कर भूदेवी के साथ भूलोक में पधारकर लक्ष्मी-का अन्वेषण करने लगा। कुल 56 प्रदेशों में विष्णु अपने शंख, चक्र, गंध और कुण्ड्या के साथ विविध-रूपों में उसका अन्वेषण करते हुए कोलहपुर पहुँचा। वहाँ वह साल रहकर लक्ष्मी देवी की उपासना की। एक दिन आकाश वाणी सुनाई पड़ी - ‘‘हे विष्णु भगवान, प्रसन्न चित हो जाओ।’’ तुम अपनी पद्म लक्ष्मी देवी को देखने आकूत हो। यहाँ से दो योजनाओं की (दो सी बीस मील) दूरी पर कुण्डानदी के दक्षिण में स्वर्ण - मुखरि नदी नाम की एक नदी बहती है। उस नदी की उत्तर दिशा में एक पवित्र स्थल में एक सरोवर खोद लो और वहाँ ऋषि - मुनि भी रहते हैं। उस सरोवर में देव-लोक से स्वर्ण-पद लाकर रोपन करो और उसके किनारे तप करो। उस सरोवर के पास चमेली और रोस फूलों की एक सुंदर बाग है। स्वर्ण - पदों से लक्ष्मी की उपासना करते बारह साल तप करो। एक दिन महालक्ष्मी-का एक स्वर्ण - पद से सोलह साल की सुंदर कन्या के रूप में उत्पन्न होगा। है प्रभु स्वर्ण मुखरि नदी के तट पर जाने से ही तुम्हारा श्रेय होगा।’’ इस वाणी को सुनते ही विष्णु अपने गरुड - वाहन पर चढ़कर उस नदी के तट पर गया। रातों में कई प्राणी पर्वतों और अरण्यों से होकर भगवान वराह-क्षेत्र के अन्तर्गत भिड़े पहुँचा। उद्यम उत्तरकार वहाँ की पुकारिणी में स्नान किया और वराह की पूजा की। वहाँ वैखानस नामक एक मुनि ने भगवान की अर्चना की और उस रात को वहाँ विश्राम किया। दूसरे दिन सबेरे एक रात्रि का रूप धारण करके दक्षिण दिशा में स्वर्ण-मुखरि नदी तट पर पहुँचा।
कहाँ के पवित्र मैदान में अपनी कुण्ड (कटार) से एक सुंदर सरोवर खोल लिया। उसने वायुदेव को बुलाकर आज्ञा की कि देवलोक जाकर देवेन्द्र की अनुमति से स्वर्ण-पद्मों को लाओ। उनका इस सरोवर में रोपण करना है और उन से लक्ष्मी देवी की पूजा करनी है। वायुदेव ने कहा - "हे प्रभु, इस स्वर्ण-मुखरि नदी में कई पद्म विकसित हुए हैं पुनः उन्हें लाने की क्या आवश्यकता है?" प्रभु ने कहा "जब में कोल्हापुर में लक्ष्मी देवी की उपासना करता था, तब आकाशवाणी ने कहा कि देवलोक के स्वर्ण-पद्मों का रोपण इस सरोवर में करना है और उन से लक्ष्मी की पूजा करनी है। अतः में उन्हें चाहता हूँ।" वायुदेव देवलोक से स्वर्ण-पद्म लाया।

सूर्यनारायण की प्रतिष्ठा

उस सरोवर में पद्मों का रोपण करने के बाद भगवान ने सूर्यनारायण पूरब दिशा में प्रतिष्ठा की जिससे पर्य निर्मित रहें। सूर्य कमल-मित्र (पद्मों का मित्र) है। लक्ष्मी देवी को देखने के उद्देश्य से भगवान पश्चिम की ओर मुख करके सूर्यनारायण के सामने खड़े हो गए। वह प्रति दिन तीन हजार पद्मों से तीन हजार बार लक्ष्मी की पूजा करने लगा। इस कठोर तप के बारे में वर्ष बीत गए।

महाविष्णु को तीन तप में मना देखकर माया से प्रेरित इन्द्र ने उसके तप में अवरोध-दालना चाहा। अतः उसने अप्सरा से कहा - "अंजनादि के पास स्वर्ण-मुखरि नदी के दक्षिणी तट पर एक खिलालिक राजा अपने चार भुजाओं से तीन लोकों का धन पाने के लिए तप
करता है। तुम अपने सौंदर्य और सम्मोहित अभिनय से उसे अपने मोह - के नाल में फंसा लो। उसके तप का भंग करो।" इसके अनुसार वर्तमान जनुआरी के आगमन से अपस्त रोम-देवता के सहयोग से पंजाब-सरोवर के पास पहुँची। कपिल आस-पास धारक मधुर-आलाप करती थी। वृक्ष, पौधे और पुष्प पञ्चकित विकसित होकर प्रकृति के सौंदर्य में चार चौंद लगाते थे। देव कथ्याएँ प्रेम भरे संगीत से भगवान के तप को भंग करना चाहती थी। विष्णु की तिरस्कार-युक्त हड़प्पा से वे निराश हो देवलोक वापस चली गयीं। इस प्रकार भगवान ने बारह वर्ष की तपस्या पूरी की।

पद्मावती का अवतरण

tेरहवें वर्ष में कार्तिक-मास के शुक्ल-पक्ष में पचमी तिथि - पर उत्तराणांक नक्त्र युक्त शुक्लवार शुम-लघु में श्री पद्मावती देवी का अवतरण एक स्वर्ण-कमल के मध्य-दुआ। अपने दोनों हाथों में पत्तों को लिए स्वर्ण स्वर्ण-पत्ता की भूमि प्रकाशमन थी। उसके चरण कमल के अरुण वर्ष से दीप थे; नेत्र पद्म सहस्र और अधर सीप की अरुणिमा से प्रकाशमन थे; उसके आभूषण नव-रत्नों से और मोहियों के कठोर तथा चमकते द्वार स्वर्ण-कंकणों से जिलमिलते थे। जरीदार वर्षों से कल्हासिनी अमृत सम दीप से विराजमान थी; कंठ में पुष्पमालों से सजित लक्ष्मीदेवी पद्मावती देवी के नाम से अवतरित हुई। उसने माधव की ओर हटियत किया। देवताओं और गद्यों ने मधुर गीत गाये और अपसारों ने आनंद विनोब हो नायी। इस शुभ समय पर ब्रह्म सरस्वती के साथ परमेश्वर पार्वती
देखते हुए विषु के वक्तव्य पर आसीन हो गयी। ब्रह्म और अन्यदेवता विषु और महालक्ष्मी के पुनः समागम से संतुष्ट हो अपने लोक चले गए।

पवन-सरोवर का विवेचन

श्रीहरि अपनी प्रिय सहचरिणी को पुनः प्राप्त करने के बाद सरोवर से इस प्रकार बोले:-

"हे सरोवर तुम्हारे तट पर तप करने से मैं ने पद्मावती को पुनः पाया है। अतः आज से तुम्हें सारा जगत पद्मावती-पवन-सरोवर" नामसे पुकारेगा। इस सरोवर में जो भी-स्नान करेगा उसके पापों को तुम प्रक्षालन करो और उनकी कामनाओं को पूरा करो।"- इस के बाद विषु रमा-देवी के साथ गुडूँ-भर चढ़कर स्वामि-पुकारिणी के तट पर सुख-संतोष से रहने लगा।

कई त्रिभुज-मुनियों ने पद्मावती-पवन-सरोवर की स्तुति इस प्रकार की हैं :-

1. नारद : जो इस सरोवर में गोता लगाता है वह अपने सात जन्मों के पापों से मुक्त हो जाये और वह लक्ष्मी पति सम शुद्ध होगा।
2. विलिलंक : इस में स्नान करने से सकल संपदा प्राप्त होगी।
3. अबिः : जो इस सरोवर में नहाता है उसके पाप क्षय हो जायेगे और वह अभिनंदित संपदा पायेगा।
4. अंगीरस : इस सरोवर में स्नान करने से राजा को अपना खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त होगा और वह प्रतेक प्रकार का धन पायेगा।

5. मरीचि : जो इस पवन-सरोवर में स्नान करेगा वह एक क्षण में अपने अविकृतिक पापों से मुक्त होगा; इस में संदेह नहीं।
6. पुलस्त्य : जिसने अपने वैदिक कर्म एवं मन्त्रों को छोड़ दिया है वह एक बार इस में नहाने से शुद्ध ग्राहण बनेगा।
7. क्रुः : जो शुद्ध देव और ग्राहणों से हेतु करता है वह इस सरोवर में स्नान करने से सदाचारी वैश्य बनेगा।

श्रीशुकपुरी

श्रीशुक ब्रह्म श्रीमहाभारत, भागवत-और अष्टदश पुराणों का लेखक श्रीवंद्यवास का पुत्र था। श्रीपद्मावती और श्रीनिवास के विवाह के शुभ-लग्न को देखने के बाद मेध मन्त्र पर ब्रह्म संह में तुच्छ, वशिष्ठ, आदि महंतों और देवगण तथा इन्द्र से सरोवर की स्तुति सुनकर श्रीशुक बेनकटाचल पर पधारा। उसने पुण्य-तीर्थ में नहाते ही दिव्य-वाणी सुनी कि उसको पद्मसरोवर जाना है। वहाँ पद्मसरोवर उसने तीर्थ तपस्या विषु के बारे में की। इसका तपो-भंग करने के लिए इन्द्र ने रंभा-आदि अपराधों को भेजा। उनकी मोहपूर्ण पेट्रिके वालों को देखकर शुक ने तपो भंग के भय से प्रभु-श्रीनिवास की स्तुति की। दशात्मारत्स्तोत्र का परम होकर इस प्रकार अपराधों भय से वापस गयी। उसके तप से प्रसन्न होकर श्रीनिवास उसके सामने प्रत्यक्ष हो गए। उसे मोक्ष प्रदान किया। शुक ने एक सी आठ प्राणों की सृष्टि की और उन्हें छोटे गोत्र नामों में विभाजित किया। वे ही भर्तार्य आदि त्रिभुज इसी प्रकार हैं। वहाँ सरोवर के पास एक अग्रहार का निर्माण किया जिसे
शृङ्गपुरा नाम दिया। श्रीकृष्ण और बलराम की भी प्रतिष्ठा की जो क्रमशः: देवकी-वायुदेव और नंद-यशोदा के आनंद-वर्धन के कारण थे।

श्री सूर्यनारायण

सूर्य भगवान का मंदिर हम बहुत कम देखते हैं। यदि कहीं ऐसा मंदिर भी है तो वह पद्मस्वरूप के समीप प्रतिष्ठित सूर्य-मंदिर की तुलना नहीं कर सकता। श्रीमद्भगवद्गीता की महत्ता इसलिए है कि वह स्वयं श्रीप्रभात के दिव्य ओरों से कथित है। इसी प्रकार भगवान श्रीनिवास ने स्वयं यहाँ सूर्यनारायण की प्रतिष्ठा की है।

इसकी अर्थना श्रीकृष्ण देवी के साथ की जाती है। यही सूर्यमंदिर की विशेषता है। सूर्यनारायण के सामने ही भगवान ने बारह सालों का तप किया है, जो इस मंदिर की पवित्रता में चार चांद लगाता है।

श्रीराम ने रावण से युद्ध किया था। उस से पहले राम के श्रम को समझकर अगस्त महर्षि ने राम को आदित्य-हरदय का योग कराया आचमन कर तीन बार उस मन्त्र का पठन करने का आदेश दिया था। उसने कहा था कि ऐसे करने से राम अपने शतु का योग कर सकता है। इस प्रकार करने से राम पुरुषस्वरूप-पद्म-कर सकता। आदित्य- हरदय क्या है? इसका संकेत युद्ध में परिचय पाए। यह एक रहस्य मन्त्र है जिसके पतन से शतु-भय दूर हो जायेगा। इससे शतु-विनय ही नहीं अन्य लाभ भी हैं। इससे निर्मल भन और निरक्त पाए। भौतिक और मानसिक अवस्था दूर होगी। आयु की भी वृद्धि होगी। सूर्य-मण्डलवर्त्ति नारायण परम श्रेष्ठ है। वह विश्व का संचालक और संरक्षक है। सूर्य-किरणों से बन प्रकाश का मालिन्य दूर होगा। वही ब्रह्म, विश्व, शिव, सुन्दर्कपथ और अष्ट दिक्पालक हैं। इसके आदेश के अनुसार ही पितृ-देवता, अष्ट-ब्रजु, अष्टिनी- देवता और मनुष्य अपने काम करते हैं। वही पाँचो ऋषियों का कारक है।

सूर्य अविष्ट का प्रति है। वह शतु-नाशक है। उसी की कुप्रा से अन्नान का अंधकार दूर हो जाता है। वही वर्ण का दाता और शीतलता का नाश करने वाला है। वह जड-चेतन दोनों का रक्षक है।

वेदः नीति का ग्रहण वही करता है। वह नक्षत्रों और ग्रहों का राजा है। प्रत्येक सरीर की तेजस्विता का कारण भी वही है। शुद्ध कांवन समान वह प्रकाशमान है। उस का जन-प्रियता का कारण वह “लोकमन्नव्य” कहलाता है। यह और यागों में यही प्रथम है और संसार का लय भी यही करता है। सच्चा-विन्दन में सूर्यनारायण की स्तुति इस प्रकार है:-

ध्येयसदा सतित्मण्डलप्रसादः
नारायण: सतिनिरसनसन्निवितः।
केदारानं कककुण्डलवान् किरिकी
हरी हितमयवधु: धृष्टशंकचकः।

ध्यो नारायणसदा-इसमें सूर्य मण्डल स्थित नारायण है, जो शंख-चक तथा वृक्षायन रत्नयचित्र आवृत्तियों से प्रकाशित है।
उसका शरीर स्वर्ण वर्ण युक्त है इसकी उपासना करनी चाहिए।
प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य यही है कि वह इस पथ सरोवर तत पर प्रतिष्ठित सूर्यनारायण की महत्ता को जान ले।

श्रीशुकपुरी की स्थली हजारों कष्टों से गायन का योग्य है। दो कारणों से इसकी प्रशंसा है-एक तो वह स्वाभाविक नदी के तट पर स्थित है। दूसरा आदिवासी-क्षेत्र में श्रीपावली के पास श्रीनिवास के कर-कमलों से निर्मित सरोवर है जिसमें से लक्ष्मीदेवी का उद्गार पवारती के नाम से गुहा है। इसका प्रमाण देशान्त देशिका से लिखत प्रीति है जिसमें शुकपुरी की देवी पवारती का विशेष वर्णन है। इस प्रकार हैः

“अने भूत्त: सरसिनमये भुद्रीते निष्णां
अम्नोराशिरितसुधारसृप्तवादुश्रीतं त्वाम्
पुषाहर्षितमथुवने: पुष्कलवर्तवाचैः
क्लूतसार्भं: कनककलसये: अम्यसिन्येन गणेनुः”

जिस प्रकार कोरकर्थे से लक्ष्मीदेवी का प्रादुर्भाव हुआ था उसी प्रकार पथ-सरोवर में एक पथ से उसका उदय हुआ। वह श्रीनिवास के तप का और महर्षि भूगु के उदयों का फल है। जिस प्रकार पुष्कला महाराज नामक नेचु में पुष्कल की वर्ण बरसाई थी उसी प्रकार हाथियों ने कनक-पशुओं से पवारतीदेवी पर घाती की वर्ण की। यह अवतार का एक लक्षण माना जाता है।”

ब्रह्मोत्सव

तमिल भाषा कार्तिक के बहु-पक्ष के एकदश अथवा द्वादश के दिन पांचरात्र आगम के अनुसार ध्वजारोहण क्रिया करते हैं।
पाँचवें दिन जनवाहन सेवा, छठे दिन गरुडसेवा, और आठवें
दिन रथोत्सव मनाए जाते हैं। साधारणतया अन्य मंदिरों में रथोत्सव
cे साथ ब्रह्मोत्सव का अंत होता है और अवशेष-स्नान की कोई
प्राधान्यता नहीं रहती। परंतु यहाँ रथोत्सव के बाद "पंचमीतीयम्"
नाम से मनाया जाता है। यह पंचमी के शुभदिन बहुत धूमधाम से
और प्राधान्यता से मनाया जाता है। इसके पहले के दिन पर
tिरुमल - गिरि पर प्रत्येकपूजा होती हैं। तुलसी पीताम्बर, मंजिल
पन्यारम (मिटाइयों) सब को 'पड़ि' कहते हैं जिन की परिक्रमा
मंदिर के चारों सूचनधियों से करायी जाती है। इसके बाद इसे
tितरिपति प्राधन दीयों में आलय के संपन्न दिन के अनुसार जलूस में
nिकलता है। तदनत्तर एक हाथी पर 'पड़ि' को श्री शुकपुरी
(अयम्मल मंगापुर) ले जाते हैं। इस समय श्रीपदावती देवी को
पहली-उत्सव मनाते हैं। मंदिर की चारों और परिक्रमा करने के
बाद प्रत्येक पूजा और 'चूणाभिषेक' (कुंकुमाभिषेक) मनाया जाता है।
इस पूजा के बाद देवी की प्रतिमा को चक्षुंरंजन चक के साथ आठ
स्तंभों के मंटप में ले जायें जो पत्र सरोवर के तट पर स्थित है।
जब तिरुमला से 'पड़ि' आता है तो देवी के मंदिर के प्राधन अर्चक
और अधिकारी गाँव की सीमा पर जाकर स्वागत करते हैं। 'पड़ि'
'श्रीयारि पड़ि' श्रीशुकपुर की दीयों से होकर मंदिर पहुँचेंगा। वहाँ
स्नान तिरुमलनम मंटप में होगा। चक्र-स्नान भी होता है। इस श्रुभ
अवसर पर हजारों भक्त सरोवर में स्नान करते हैं जिस से उनके
पाप दूर हो जाते हैं। सालुपुर चलेगा। सन्ध्या के समय देवी को
अलंकृत करके गंगुन्नरमंटप में आस्थान के लिए ले जाते हैं। वहाँ से फिर देवी को मंदिर में ले जायेंगे। उस रात को ‘तिरु-वीथि-उत्सव’ के बाद ध्वज का अवरोहण उत्सव होगा। इस के साथ ही वैभव-पूर्ण उत्सव की परिसमाप्ति होगी। ‘ऐतिहासिक’ के अनुसार इस दिन भगवान श्रीनिवास अपनी सती का दर्शन करेगा। इसी कारण तिरुमल के मंदिर में तिरुचानूर में चक्रसन्नम के समय तक पूजा नहीं होती।

तिरुचानूर का पंचमी तीर्थ का वैभव देखने योग्य है।

“श्रीम: कान्ताय कल्याणनिधये निध्येदर्थिनाम।
श्री वेश्वरनिवास्य श्रीनिवासाय मदुलम॥”

* * *